International Journal of Global Science Research **ISSN: 2348-8344 (Online)**
Vol. 13, Issue. 1, April 2026, pp. 9152-9158 **DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v13.i1.2026.355**
***Available Online* at www.ijgsr.com**
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved

Research Paper

शिक्षा का पारिवारिक व्यवस्था पर प्रभाव शहडोल जिले के विशेष संदर्भ में

नंदिनी सिंह
समाजशास्त्र विभाग, पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल, मध्य प्रदेश, भारत
Email: webinarshahdol@gmail.com

Received: 21/03/2026
Revised: 09/04/2026
Accepted: 14/04/2026

शोध सार
शिक्षा एवं पारिवारिक व्यवस्था दोनों एक दूसरे से संबंधित है । क्योंकि शिक्षा का प्रभाव पारिवारिक व्यवस्था पर भी पड़ता है। मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में जैसे-जैसे महिलाओं की शिक्षा का विकास होता गया वैसे-वैसे पारिवारिक संरचना का ढांचा बदलता गया। शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन आया है । आज संयुक्त परिवार व्यवस्था खत्म होती जा रही है और एकल परिवार व्यवस्था बढ़ती जा रही है ।महिलाओं की शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई है और महिलाएं परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय में भागीदारी निभाती है। महिलाओं की शिक्षा के कारण परिवार में अंधविश्वास, पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियां भी खत्म हो रही है।

प्रस्तावना

शिक्षा एवं समाज दोनों ही एक दूसरे से संबंधित है। शिक्षा के बिना एक अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है । शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति में ज्ञान, तर्क एवं नैतिकता का विकास होता है। शिक्षा केवल व्यक्तियों में ही परिवर्तन नहीं लाती है बल्कि यह समाज की संरचनाओं में भी एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाती है ।

परिवार समाज की अति महत्वपूर्ण एवं आधारभूत इकाई है, जिसे समाज की केंद्रीय संरचना माना जाता है।पारिवारिक संरचना भी शिक्षा के प्रभाव से अछूती नहीं रही है । देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार जिस प्रकार से शिक्षा में परिवर्तन आया है उसका प्रभाव हमें पारिवारिक व्यवस्था पर भी देखने को मिला है । यदि हम भारत की प्राचीन पारिवारिक व्यवस्था पर दृष्टिपात करें तो तो हमें यह पता चलता है कि प्राचीन पारिवारिक व्यवस्था संयुक्त परिवार प्रणाली पर आधारित थी। शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण जैसी आधुनिक विचारधाराओं के कारण पारिवारिक संरचना में भी बदलाव आया और अब संयुक्त परिवार प्रणाली

International Journal of Global Science Research **ISSN: 2348-8344 (Online)**
Vol. 13, Issue. 1, April 2026, pp. 9152-9158 **DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v13.i1.2026.355**
***Available Online* at www.ijgsr.com**
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved

नाभिक परिवार प्रणाली में बदलती जा रही है। इसके साथ ही साथ महिलाओं की स्थिति, मुखिया की स्थिति, निर्णय लेने की क्षमता, पति-पत्नी संबंध, बच्चों का पालन पोषण आदि के संदर्भ में महत्वपूर्ण परिवर्तन पारिवारिक संरचना में देखने को मिल रहे हैं।

शिक्षा की अवधारणा

शिक्षा की अवधारणा एक व्यापक अवधारणा है। यह एक बहुआयामी और सतत प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक- सांस्कृतिक आदि पक्षों का समग्र विकास होता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति जीवन जीने की कला सीखता है और समाज का उत्तरदाई सदस्य बनता है।

शिक्षा शब्द के शाब्दिक अर्थ की बात करें तो शिक्षा अंग्रेजी के एजुकेशन शब्द से बना है। एजुकेशन शब्द लैटिन भाषा के Educare से बना है। जिसका अर्थ होता है पालन पोषण करना। एजुकेशन शब्द Educere से भी संबंधित है जिसका अर्थ होता है आंतरिक क्षमताओं को विकसित करना। एजुकेशन शब्द एक अन्य शब्द Educatum से भी संबंधित है जिसका अर्थ प्रशिक्षण से लगाया जाता है।

इस प्रकार से समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि शिक्षा हमारे हमारे मन एवं मस्तिष्क का पालन-पोषण करती है तथा हमारे अंदर विद्यमान शक्तियों का विकास करती है।

शिक्षा की परिभाषा

स्वामी विवेकानंद के अनुसार- "शिक्षा मनुष्य में निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

महात्मा गांधी के अनुसार - "शिक्षा से मेरा आशय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा की श्रेष्ठ क्षमताओं के सर्वांगीण विकास से है।"

जॉन डीवी के अनुसार - "शिक्षा अनुभवों का पुनर्गठन और पुनर्निर्माण है, जो अनुभवों को अधिक अर्थपूर्ण बनाती है तथा भविष्य के अनुभवों को दिशा देने की क्षमता बढ़ाती है।"

शिक्षा के प्रकार

औपचारिक शिक्षा - औपचारिक शिक्षा ऐसी शिक्षा है जिसमें निश्चित नियमों के तहत संस्थागत ढांचे के अंतर्गत शिक्षा प्रदान की जाती है। उदाहरण के लिए विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में प्रदान की जाने वाली शिक्षा।

अनौपचारिक शिक्षा -ऐसी शिक्षा जिसे व्यक्ति अपने जीवन में अपने अनुभवों के माध्यम से प्राप्त करता है तो उसे अनौपचारिक शिक्षा कहा जाता है। उदाहरण के लिए परिवार एवं समाज के अनुभवों से प्राप्त होने वाली शिक्षा।

गैर औपचारिक शिक्षा - गैर-औपचारिक शिक्षा एक संगठित, उद्देश्यपूर्ण एवं नियोजित शैक्षणिक प्रक्रिया है जो औपचारिक शैक्षिक ढाँचे के बाहर संचालित होती है। इसमें पाठ्यक्रम, समय, स्थान और शिक्षण विधियों में लचीलापन होता है तथा जिसका उद्देश्य विभिन्न आयु समूहों और विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों को शिक्षा प्रदान करना होता है। वयस्क शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

परिवार की अवधारणा

परिवार समाज की धुरी है।एक बच्चे का जन्म किसी न किसी परिवार में ही होता है और परिवार के माध्यम से ही उसका प्रारंभिक समाजीकरण होता है। प्रसिद्द विद्वान चार्ल्स कूले परिवार को एक ऐसा

International Journal of Global Science Research
Vol. 13, Issue. 1, April 2026, pp. 9152-9158
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v13.i1.2026.355

प्राथमिक समूह मानते हैं जो बच्चों के सामाजिक जीवन और आदर्शों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

परिवार अंग्रेजी भाषा के Family शब्द से बना है जो कि लैटिन भाषा के Famulus शब्द से बना है इसके अंतर्गत माता-पिता, बच्चे, नौकर और दास आते हैं।

परिवार की परिभाषा

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार - "परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंधों द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन पालन की व्यवस्था करता है।"

मर्डोक के अनुसार - "परिवार एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसमें सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग और प्रजनन की विशेषताएँ पाई जाती हैं।"

परिवार की विशेषताएं

- सार्वभौमिकता
- एक सामान्य निवास
- रचनात्मक प्रभाव
- भावनात्मक आधार
- सीमित आकर
- सदस्यों का उत्तरदायित्व
- सामाजिक संरचना में केंद्रीय स्थिति

परिवार के प्रकार

वंश -नाम के आधार पर परिवार के प्रकार

पितृवंशीय परिवार - ऐसा परिवार जिसमें पिता के वंश के आधार पर ही बच्चों का वंश निर्धारित होता है।

मातृवंशीय परिवार -ऐसा परिवार जिसमें माता के वंश के आधार पर ही बच्चों का वंश निर्धारित होता है।

विवाह के आधार पर परिवार के प्रकार

एक विवाही परिवार - जब एक पुरुष एक स्त्री से विवाह करता है तो ऐसे विवाह के द्वारा बने परिवार को एक विवाही परिवार कहते हैं।

बहु विवाही परिवार - जब कोई एक पुरुष या स्त्री एक से अधिक स्त्री या पुरुष से विवाह करते हैं तो ऐसे विवाह के द्वारा उत्पन्न हुए परिवार को बहु विवाही परिवार कहते हैं।

बहु विवाही परिवार को दो भागों में बांटा जा सकता है

बहुपति विवाही परिवार - जब एक स्त्री एक से अधिक पुरुषों से विवाह करती है तो इसे बहुपति विवाही परिवार कहते हैं। उत्तराखंड की खस जनजाति में इस प्रकार का विवाह पाया जाता है।

बहुपत्नी विवाही परिवार -जब एक पुरुष एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करता है तो इसे बहुपत्नी विवाही परिवार कहा जाता है।

निवास - स्थान के आधार पर परिवार के प्रकार

पितृस्थानीय परिवार - यदि एक स्त्री विवाह के पश्चात अपने पति के घर जाकर निवास करती है तो ऐसे परिवार को पितृस्थानीय परिवार कहा जाता है।

मातृस्थानीय परिवार - जब एक पुरुष विवाह के पश्चात अपने पत्नी के परिवार में जाकर निवास करता है तो इस प्रकार के परिवार को मातृस्थानीय परिवार कहा जाता है। भारत में नायर जनजाति, गारो जनजाति तथा खासी जनजाति में मातृस्थानीय परिवार परिवार देखने को मिलते हैं।

नवस्थानीय परिवार - जब पुरुष एवं स्त्री विवाह के पश्चात अकेले किसी एक नए निवास स्थान में रहने लगते हैं तो इस प्रकार के परिवार को नवस्थानीय परिवार कहा जाता है। अर्थात नवस्थानीय परिवार में पुरुष एवं स्त्री ना तो पितृ पक्ष के यहां निवास करते हैं और ना ही मातृ पक्ष के यहां निवास करते हैं।वह किसी एक नए स्थान पर निवास करते हैं।

सदस्य संख्या के आधार पर परिवार के प्रकार

International Journal of Global Science Research ISSN: 2348-8344 (Online)
Vol. 13, Issue. 1, April 2026, pp. 9152-9158 DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v13.i1.2026.355
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved

नाभिक परिवार - ऐसे परिवार में माता-पिता एवं उनकी अविवाहित बच्चे निवास करते हैं।

संयुक्त परिवार - संयुक्त परिवार में दो या दो से अधिक पीढ़ियों के लोग एक साथ निवास करते हैं।

विस्तृत परिवार - यह परिवार संयुक्त परिवार का ही विस्तृत एवं विकसित रूप है इसमें रक्त संबंधियों के साथ-साथ दूर के रिश्तेदार भी शामिल होते हैं।

सत्ता के आधार पर परिवार के प्रकार

पितृसत्तात्मक परिवार - इस प्रकार के परिवार में पिता के पास सत्ता होती है या यह कह सकते हैं कि सत्ता पुरुषों के हाथ में होती है।

मातृसत्तात्मक परिवार - इस प्रकार के परिवार में माता के पास सत्ता होती है या यह कह सकते हैं कि सत्ता स्त्रियों के हाथ में होती है।

शिक्षा एवं पारिवारिक व्यवस्था का संबंध

शिक्षा एवं पारिवारिक व्यवस्था का संबंधअत्यंत घनिष्ठ है। परिवार में शिक्षा के प्रचार प्रसार के बढ़ने के कारण परिवार के सदस्य रोजगार की तरफ उन्मुख हो रहे हैं। साथ ही साथ परिवार के सदस्य उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने की चाह में घर से बाहर भी निकल रहे हैं और परिवार से दूर रहकर ही रोजगार की तलाश भी कर रहे हैं और यही कारण है कि परिवार का आकार छोटा होता जा रहा है।

परिवार में शिक्षा का प्रभाव इस रूप में भी देखने को मिल रहा है कि वर्तमान में पुरुष और महिलाओं की भूमिकाओं में एवं निर्णय निर्माण में परिवर्तन देखा जा रहा है। वर्तमान समय में पारिवारिक व्यवस्था में पुरुष एवं महिला दोनों को समान अधिकार प्राप्त है। पुरुषों के साथ महिलाएं भी बच्चों की शिक्षा में भागीदारी के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय हैं।

शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण वर्तमान में विवाह की आयु में बढ़ोतरी हुई है। आज लड़के एवं लड़कियां सामान्यतः 25 वर्ष के आसपास या उसके बाद ही विवाह करते हैं। साथ ही साथ शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण अंतर्जातीय विवाह एवं प्रेम विवाह भी देखने को मिल रहे हैं। बाल विवाह जैसी कुप्रथाएं समाप्त होती जा रही हैं।

शिक्षा के बढ़ते हुए प्रसार के कारण परिवार में संवाद एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बढ़ावा मिला है और अंधविश्वास, रूढ़िवादी सोच आदि में कमी आई है।

कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि जिस प्रकार से शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास हुआ है और संवाद, सहमति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता आदि को बढ़ावा मिला है। उसी प्रकार से शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण परिवार में भी यह सारी विशेषताएं हमें देखने को मिलती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

पारिवारिक निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करना।

शिक्षा के कारण महिलाओं में विवाह संबंधी विचारों में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।

परिवार में लैंगिक समानता की स्थिति का अध्ययन करना।

महिलाओं की शिक्षा के कारण परिवार के आकार में आए परिवर्तन का अध्ययन करना।

उपकल्पना

महिलाओं में बढ़ती हुई शिक्षा के कारण पारिवारिक निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

International Journal of Global Science Research
Vol. 13, Issue. 1, April 2026, pp. 9152-9158
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v13.i1.2026.355

बढ़ती हुई महिला शिक्षा के कारण महिलाएं अब देर से विवाह करती है ।

महिला शिक्षा के कारण परिवार में लैंगिक भेदभाव में कमी आई है ।

महिलाओं की शिक्षा के कारण परिवार के आकार में कमी आई है ।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन का अध्ययन क्षेत्र मध्य प्रदेश का शहडोल जिला है इसमें ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र, दोनों जगह से कुल मिलाकर 100 शिक्षित महिला उत्तरदाताओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि से किया गया है । इन महिलाओं में से 20 महिलाएं प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त महिलाएं हैं। 20 महिलाएं माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त महिलाएं हैं। 20 महिलाएं उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त महिलाएं हैं। 20 महिलाएं स्नातक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त महिलाएं हैं। और 20 महिलाएं परास्नातक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त महिलाएं हैं। इन सभी महिला उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संग्रहण किया गया है । अध्ययन को और अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए अवलोकन एवं साक्षात्कार का भी प्रयोग किया गया है ।

आंकड़ों का संग्रहण एवं विश्लेषण

आपके परिवार की प्रकृति कैसी है ?

क्रमांक	आपके परिवार की प्रकृति कैसी है ?	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	एकल परिवार	62	62
2	संयुक्त परिवार	38	38

तालिका क्रमांक - 1
(स्रोत - प्राथमिक आँकड़े)

व्याख्या -100 शिक्षित महिलाओं से यह पूछा गया कि आपका परिवार संयुक्त परिवार है या एकल परिवार है , तो 100 में से 62 महिलाओं ने यह कहा कि उनके परिवार एकल परिवार है। और 38 महिलाओं ने यह कहा कि उनके परिवार संयुक्त परिवार है। यह तालिका स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है कि एकल परिवार में वृद्धि होती जा रही है। यह वृद्धि महिला शिक्षा का तो परिणाम है , साथ ही साथ लोग अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिए शहर भी जा रहे हैं जिसके कारण परिवार का स्वरूप एकाकी होता जा रहा है।

क्या आप घर के प्रमुख निर्णय में भाग लेती हैं ?

क्रमांक	क्या आप घर के प्रमुख निर्णय में भाग लेती हैं?	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	81	81
2	नहीं	10	10
3	बहुत कम	9	9

International Journal of Global Science Research
Vol. 13, Issue. 1, April 2026, pp. 9152-9158
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v13.i1.2026.355

तालिका क्रमांक - 2
(स्रोत - प्राथमिक आँकड़े)

व्याख्या - जब महिलाओं से पूछा गया कि क्या आप घर के प्रमुख निर्णय में भाग लेती हैं। तो 100 में से 81 महिलाओं ने हाँ उत्तर दिया। 10महिलाओं ने नहीं में उत्तर दिया। जबकि 9महिलाएं यह कहती हैं कि वह प्रमुख निर्णय में बहुत कम भाग लेती हैं। यह आंकड़े यह प्रदर्शित करते हैं कि वर्तमान में महिलाएं अपने शिक्षा के महत्व को समझती हैं और वह पारिवारिक निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

क्या आपके परिवार में लड़कियों एवं महिलाओं से से किसी भी प्रकार का भेदभाव किया जाता है ?

क्रमांक	क्या आपके परिवार में लड़कियों एवं महिलाओं से से किसी भी प्रकार का भेदभाव किया जाता है ?	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां बहुत ज्यादा	7	7
2	हां थोड़ा बहुत	22	22
3	बहुत कम	35	35
4	बिल्कुल नहीं	36	36

तालिका क्रमांक - 3
(स्रोत - प्राथमिक आँकड़े)

व्याख्या - जब महिलाओं से यह पूछा गया कि क्या आपके परिवार में लड़कियों एवं महिलाओं से किसी प्रकार का भेदभाव किया जाता है ? तो केवल सात महिलाएं यह कहती हैं कि हां बहुत ज्यादा भेदभाव होता है। 22 महिलाएं यह कहती हैं कि थोड़ा बहुत भेदभाव होता है। 35 महिलाएं यह कहती हैं कि बहुत कम भेदभाव होता है। जबकि 36 महिलाएं यह कहती हैं कि किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता है। यह आंकड़े यह प्रदर्शित करते हैं कि जैसे-जैसे महिलाओं की शिक्षा का स्तर बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे लैंगिक भेदभाव में भी कमी आती जा रही है।

क्या आप यह मानती हैं कि महिलाओं की शिक्षा के कारण उनके विवाह की आयु में वृद्धि हुई है ?

क्रमांक	क्या आप यह मानती हैं कि महिलाओं की शिक्षा के कारण उनके विवाह की आयु में वृद्धि हुई है।	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सहमत	70	70
2	आंशिक रूप से सहमत	23	23
3	असहमत	7	7

International Journal of Global Science Research ISSN: 2348-8344 (Online)
Vol. 13, Issue. 1, April 2026, pp. 9152-9158 DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v13.i1.2026.355
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved

तालिका क्रमांक - 4
(स्रोत - प्राथमिक आँकड़े)

व्याख्या - जब महिलाओं से पूछा गया कि क्या महिलाओं की शिक्षा के कारण उनकी विवाह की आयु में वृद्धि हुई है तो 70 महिलाओं ने इसमें सहमति जताई। जबकि 23 महिलाओं ने आंशिक रूप से सहमति जताई। और केवल सात महिलाओं ने असहमति जताई। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि के साथ-साथ महिलाओं की विवाह की आयु में भी वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा ने महिलाओं के जीवन को बदल कर रख दिया है। शिक्षा के कारण महिलाएं आज परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय में अपनी भागीदारी निभाती हैं, उन्हें पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त हुए हैं और परिवार में लैंगिक भेदभाव में कमी आई है। साथ ही साथ जैसे-जैसे महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि होती गई वैसे-वैसे हमें परिवार के आकार में कमी भी दिखाई दी है। महिलाओं में शिक्षा का बढ़ता हुआ प्रसार परिवार को परंपरागत व्यवस्था से आधुनिक व्यवस्था की ओर ले जा रहा है, लेकिन इस आधुनिकता में हमें अपने सांस्कृतिक मूल्यों को सहेज कर रखना अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

संदर्भ

Ahuja, Ram (1999) Society in India. Rawat Publications, Jaipur.

Singh, Yogendra (1977) Social stratification and change in India. Manohar Publications, New Delhi.

Patel, Tulsi (2005)The family in India: Structure and practice, Sage Publications, New Delhi.

Singh, K. (2012) Education and changing family structure in India, *Sociological Bulletin*, 61(3), 425–443.

Kapadia, K. M. (1955) Marriage and family in India, Oxford University Press Bombay (India).